

बस की यात्रा

पाठ का सार

एक बार लेखक अपने चार मित्रों के साथ बस से जबलपुर जाने वाली ट्रेन पकड़ने के लिए अपनी यात्रा बस से शुरू करने का फैसला लेते हैं। परन्तु कुछ लोग उसे इस बस से सफर न करने की सलाह देते हैं। उनकी सलाह न मानते हुए, वे उसी बस से जाते हैं किन्तु बस की हालत देखकर लेखक हंसी में कहते हैं कि बस पूजा के योग्य है। नाजुक हालत देखकर लेखक की आँखों में बस के प्रति श्रद्धा के भाव आ जाते हैं।

इंजन के स्टार्ट होते ही ऐसा लगता है पूरी बस ही इंजन हो। सीट पर बैठ कर वह सोचता है वह सीट पर बैठा है या सीट उसपर। बस को देखकर वह कहता है ये बस जरूर गाँधी जी के असहयोग आंदोलन के समय की है क्योंकि बस के सारे पुर्जे एक-दूसरे को असहयोग कर रहे थे।

कुछ समय की यात्रा के बाद बस रुक गई और पता चला कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ऐसी दशा देखकर वह सोचने लगा न जाने कब ब्रेक फेल हो जाए या स्टेयरिंग टूट जाए। आगे पेड़ और झील को देख कर सोचता है न जाने कब टकरा जाए या गोता लगा ले। अचानक बस फिर रुक जाती है। आत्मग्लानि से मनभर उठता है और विचार आता है कि क्यों इस वृद्धा पर सवार हो गए।

इंजन ठीक हो जाने पर बस फिर चल पड़ती है किन्तु इस बार और धीरे चलती है। आगे पुलिया पर पहुँचते ही टायर पंचर हो जाता है। अब तो सब यात्री समय पर पहुँचने की उम्मीद छोड़ देते हैं तथा चिंता मुक्त होने के लिए हँसी-मजाक करने लगते हैं। अंत में लेखक डर का त्याग कर आनंद उठाने का प्रयास करते हैं तथा स्वयं को उस बस का एक हिस्सा स्वीकार कर सारे भय मन से निकाल देते हैं।

कठिन शब्दों के अर्थ -

हाज़िर: उपस्थित	रकं: गरीब
सफ़र: यात्रा	कूच करने: जाना
डाकिन: डराने वाली	निमित्त: कारण
श्रद्धा: किसी के प्रति आदर-सम्मान	फौरन: तुरंत
और प्यार का भाव	सरक: खिसक
उमड़: जमा होना	असहयोग: साथ न देना
वयोवृद्ध: बूढ़ी या पुरानी	भेदभाव: अंतर
निशान: चिन्ह	लुभावने: सुन्दर
वृद्धावस्था: बुढ़ापा	गोता: डुबकी
कष्ट: परेशानी	इत्तफ़ाक: संयोग
विदा: आखिरी सलाम	क्षीण: कमज़ोर
वृक्षों: पेड़	बियाबान: सुनसान
दयनीय: बेचारी	अंत्येष्टि: अंतिम क्रिया
वृद्धा: बूढ़ी	जान हथेली पर लेकर: बहुत खतरा लेना
ग्लानि: खेद	उत्सर्ग: बलिदान
प्राणांत: मरना	दुर्लभ: जो कम मिलता है

प्रश्न-अभ्यास

प्र०1 “मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा।” लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गई?

उत्तर-लेखक के मन में हिस्सेदार के प्रति श्रद्धाभाव इसलिए जगी क्योंकि वह थोड़े से पैसे बचाने के चक्कर में बस का टायर नहीं बदलवा रहा था और अपने साथ-साथ यात्रियों की जान भी जोखिम में डाल रहा था इसलिए लेखक ने श्रद्धाभाव कहकर उसपर व्यंग किया है।

प्र०2 “लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते।” लोगों ने यह सलाह क्यों दी?

उत्तर-लोगों ने लेखक को शाम वाली बस में सफर न करने की सलाह उसकी जीर्ण-शीर्ण हालत को देखकर दी। यदि रात में वह कहीं खराब हो गई और रात रास्ते में कहाँ बितानी पड़ जाए, कुछ पता नहीं रहता, तो परेशानी होगी। उनके अनुसार यह बस डाकिन की तरह है।

प्र०3 “ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं।” लेखक को ऐसा क्यों लगा?

उत्तर- जब बस चालक ने इंजन स्टार्ट किया तब सारी बस झनझनाने लगी। लेखक को ऐसा प्रतीत हुआ कि पूरी बस ही इंजन है। मानो वह बस के भीतर न बैठकर इंजन के भीतर बैठा हुआ हो। अर्थात् इंजन के स्टार्ट होने पर इंजन के पुर्जों की भांति बस के यात्री हिल रहे थे।

प्र०4 “गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।” लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई?

उत्तर-4. बस की वर्तमान स्थिति देखते हुए इस प्रकार का आश्चर्य व्यक्त करना स्वाभाविक था। देखने से लग नहीं रहा था कि बस चलती भी होगी परन्तु जब लेखक ने बस के हिस्सेदार से पूछा- तो उसने कहा चलेगी ही नहीं, अपने आप चलेगी।

प्र०5 “मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।” लेखक पेड़ों को दुश्मन क्यों समझ रहा था?

उत्तर-लेखक को बहुत डर लग रहा था। उन्हें ऐसा लग रहा था कि बस अभी किसी पेड़ से टकरा जाएगी और वो लोग जख्मी हो जायेंगे। इसलिए वे पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहे थे।

भाषा की बात

प्रश्न 1: बस, वश, बस तीन शब्द हैं – इनमें बस सवारी के अर्थ में, वश अधीनता के अर्थ में, और बस पर्याप्त (काफी) के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे – बस से चलना होगा।

मेरे वश में नहीं है। अब बस करो।

उपर्युक्त वाक्यों के समान वश और बस शब्द से दो-दो वाक्य बनाइए।

उत्तर-1.

वश – आज-कल के बच्चों को समझाना सबके वश की बात नहीं।

वश – भगवान की करनी मनुष्य के वश में नहीं।

बस – बस करो, कितना खाओगे?

बस – बस करो, इतना काफी है।

प्रश्न 2: “हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है।” ऊपर दिए गए वाक्यों में ने, की, से आदि वाक्य के दो शब्दों के बीच संबंध स्थापित कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को कारक कहते हैं। इसी तरह दो वाक्यों को एक साथ जोड़ने के लिए ‘कि’ का प्रयोग होता है। कहानी में से दोनों प्रकार के चार वाक्यों को चुनिए।

उत्तर-2. कारक शब्द से निर्मित वाक्य –

१ यह समझ में नहीं आता कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

२ नई नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है।

३ यह बस पूजा के योग्य थी।

४ बस कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस में जा रहे थे।

प्रश्न 3: “हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी।” दिए गए वाक्यों में आई ‘सरकना’ और ‘रेंगना’ जैसी क्रियाएँ दो प्रकार की गतियाँ दर्शाती हैं। ऐसी कुछ और क्रियाएँ एकत्र कीजिए जो गति के लिए प्रयुक्त होती हैं, जैसे– घूमना इत्यादि। उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर-3. टहलना – दादाजी को टहलना अच्छा लगता है।

चलना – चलना सेहत के लिए बहुत लाभदायक है।

प्रश्न 4: “काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था।” इस वाक्य में ‘बच’ शब्द को दो तरह से प्रयोग किया गया है। एक ‘शेष’ के अर्थ में और दूसरा ‘सुरक्षा’ के अर्थ में। नीचे दिए गए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करके देखिए। ध्यान रहे, एक ही शब्द वाक्य में दो बार आना चाहिए और शब्दों के अर्थ में कुछ बदलाव होना चाहिए।

(क) जल (ख) हार

उत्तर- 4. (क) जल – मीना गरम जल से बुरी तरह जल गई।

(ख) हार – यह प्रतियोगिता के इस पड़ाव में जिसकी जीत होगी उसे मोतियों का हार मिलेगा और जिसकी हार होगी वह प्रतियोगिता के बाहर हो जाएगा।

प्रश्न 5: बोलचाल में प्रचलित अंग्रेजी शब्द ‘फर्स्ट क्लास’ में दो शब्द हैं – फर्स्ट और क्लास। यहाँ क्लास का विशेषण है फर्स्ट। चूँकि फर्स्ट संख्या है, फर्स्ट क्लास संख्यावाचक विशेषण का उदाहरण है। ‘महान आदमी’ में किसी आदमी की विशेषता है महान। यह गुणवाचक विशेषण है। संख्यावाचक विशेषण और गुणवाचक विशेषण के दो-दो उदाहरण खोजकर लिखिए।

उत्तर-5 संख्यावाचक विशेषण – चार, आठ, दस

गुणवाचक विशेषण – चाँदनीरात, समझदार आदमी